नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

ना हो नौनिहालों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़

स्कूल जाने वाले बच्चों की सुरक्षा केवल उनके माता-पिता की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज और प्रशासन की सामूहिक जवाबदेही है. दुर्भाग्य से आज भी शहरों और कस्बों में स्कूल रिक्शा, ऑटो और वैन में क्षमता से कई गुना अधिक बच्चों को बैठाकर उनकी जान जोखिम में डाली जा रही है. यह स्थिति केवल नियमों के उल्लंघन का मामला नहीं, बल्कि मासूम बच्चों के जीवन के साथ खुला खिलवाड़ है.

हर वर्ष स्कूल खुलने के साथ प्रशासन अभियान चलाने, जांच करने और नियमों के पालन के बड़े-बड़े दावे करता है. कुछ दिनों तक चालान काटे जाते हैं, चेतावनी दी जाती है, लेकिन समय बीतते ही पूरा अभियान ठंडे बस्ते में चला जाता है. नतीजा यह होता है कि ओवरलोड वाहन फिर से सड़कों पर दौड़ने लगते हैं. तस्वीरें और वीडियो बार-बार यही साबित करते हैं कि व्यवस्था की निगरानी कमजोर है और नियमों का भय लगभग समाप्त हो चुका है.

एक छोटे से ऑटो में आठ-दस बच्चों को ठूंस देना, वैन में निर्धारित क्षमता से कहीं अधिक विद्यार्थियों को बैठाना और कई बार दरवाजे खुले रखकर वाहन चलाना किसी भी दृष्टि से स्वीकार्य नहीं हो सकता. दुर्घटना होने पर सबसे पहले यही प्रश्न उठता है कि प्रशासन पहले क्यों नहीं जागा. लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है.

सुप्रीम कोर्ट और विभिन्न राज्यों ने स्कूल वाहनों के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाए हैं. वाहन की फिटनेस, चालक का सत्यापन, निर्धारित क्षमता, अग्निशमन यंत्र, प्राथमिक उपचार किट और सुरक्षा मानकों का पालन अनिवार्य किया गया है. इसके बावजूद इन नियमों का पालन कागजों तक ही सीमित दिखाई देता है. जब तक नियमित और सख्त निगरानी नहीं होगी, तब तक नियमों का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाएगा.

इस समस्या का एक आर्थिक पक्ष भी है. कई अभिभावक कम शुल्क के कारण ऐसे वाहनों का चयन कर लेते हैं, जबकि कुछ वाहन चालक अधिक कमाई के लालच में क्षमता से अधिक बच्चों को बैठाते हैं. स्कूल प्रबंधन भी कई बार परिवहन व्यवस्था की प्रभावी निगरानी नहीं करता. परिणामस्वरूप बच्चों की सुरक्षा सबसे कमजोर कड़ी बन जाती है.

जरूरत इस बात की है कि प्रशासन केवल औपचारिक कार्रवाई तक सीमित न रहे. स्कूल खुलने के शुरुआती दिनों के बजाय पूरे वर्ष नियमित जांच अभियान चलाए जाएं. नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के लाइसेंस निलंबित किए जाएं, वाहनों का पंजीयन रद्द किया जाए और बार-बार गलती करने वालों पर कठोर दंड लगाया जाए. साथ ही स्कूल प्रबंधन की जवाबदेही भी तय की जानी चाहिए.

अभिभावकों को भी अपनी भूमिका समझनी होगी. यदि कोई वाहन क्षमता से अधिक बच्चों को लेकर जा रहा है तो केवल सुविधा या कम खर्च के कारण उसे स्वीकार करना उचित नहीं है. बच्चों की सुरक्षा किसी भी आर्थिक बचत से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है.

किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने बच्चों की कितनी सुरक्षा करता है. यदि हम अपने नौनिहालों को सुरक्षित स्कूल तक पहुंचाने की व्यवस्था भी सुनिश्चित नहीं कर सकते, तो विकास के बड़े-बड़े दावों का कोई अर्थ नहीं रह जाता. प्रशासन, स्कूल, वाहन संचालक और अभिभावक सभी को मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि बच्चों की सुरक्षा के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं होगा. क्योंकि एक छोटी-सी लापरवाही जीवनभर का बड़ा पछतावा बन सकती है.

विंध्य की डायरी

पुराने पर दांव या नए चेहरों की एंट्री सियासी गलियारों में तेज कानाफूसी

डॉ. रवि तिवारी

दिल्ली से लेकर भोपाल तक मंत्रिमंडल विस्तार की चर्चाओं ने सियासी पारा चढ़ा दिया है. केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टीम और मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के संभावित मंत्रिमंडल विस्तार को लेकर सत्ता के गलियारों में तरह-तरह के समीकरण गढ़े जा रहे हैं. खासकर विंध्य क्षेत्र को लेकर चर्चा और भी दिलचस्प है. क्षेत्र का प्रतिनिधित्व पहले से मंत्रिमंडल में है, लेकिन अब सवाल यह है कि क्या पुराने चेहरे बरकरार रहेंगे या संगठन इस बार किसी नए चेहरे पर दांव लगाएगा? राजनीतिक जानकारों की मानें तो इस बार परफॉर्मेंस, संगठन की रिपोर्ट और आगामी चुनावी रणनीति को ध्यान में रखकर फैसले हो सकते हैं. इसलिए कुछ मौजूदा मंत्रियों की धडक़नें भी बढ़ी हुई बताई जा रही हैं. वहीं दावेदारों के समर्थक अपने-अपने नेताओं का नाम आगे बढ़ाने में जुटे हैं.

भाजपा के अंदरखाने की एक पुरानी कहावत इन दिनों फिर चर्चा में है 'जिसका नाम सबसे ज्यादा चलता है, कई बार अंतिम सूची में वही नहीं दिखता.' यही वजह है कि सियासी गलियारों में कानाफूसी है कि कहीं कुछ लोग जानबूझकर मजबूत दावेदारों के नाम हवा देकर उनकी दावेदारी कमजोर करने का खेल तो नहीं खेल रहे. फिलहाल न दिल्ली ने पत्ते खोले हैं, न भोपाल ने, लेकिन विंध्य में चर्चा यही है कि इस बार मंत्रिमंडल में नया चेहरा चमकेगा या पुराने चेहरे ही अपनी कुर्सी बचाने में सफल होंगे.

परिक्रमा, पैरवी और गणित... आखिर किसके सिर सजेगा ताज?

सिंगरौली पुलिस महकमे में इन दिनों वर्दी से ज्यादा चर्चा चौकी प्रभारी की कुर्सियों की है. करीब एक पखवाड़े से निवास और गोभा पुलिस चौकियां प्रभारीविहीन हैं, जिससे इन पदों पर तैनाती को लेकर कई उप निरीक्षक पूरे उत्साह के साथ 'दौड़' में बताए जा रहे हैं. कोई अनुभव का तराजू लेकर चल रहा है तो कोई संपर्कों की सीढियां नाप रहा है. उधर इस बात की चर्चाएं खूब चल रही है कि प्रभारी मंत्री के यहां से तीन-तीन उप निरीक्षकों के नाम प्रस्तावित होने की चर्चाएं भी महकमे के गलियारों में खूब तैर रही हैं, जिससे समीकरण और दिलचस्प हो गए हैं.

कहने वाले तो यहां तक कह रहे हैं कि कई स्तरों पर पैरवी और गुणा-भाग का दौर जारी है, लेकिन अंतिम मुहर अब तक नहीं लग पाई और जय विजय से कौन पर पाएगा यह तो वक्त ही बताएगा . नतीजा यह कि एसपी कार्यालय में भी असमंजस का माहौल बना हुआ है. नवागत पुलिस अधीक्षक जिले के हालात और प्रशासनिक समीकरणों को समझने में जुटे हैं, इसलिए तबादला सूची फिलहाल फाइलों में ही टहलती नजर आ रही है.

अब देखना दिलचस्प होगा कि आखिर किसकी मेहनत, किसकी पैरवी और किसका भाग्य चौकी प्रभारी की कुर्सी तक पहुंचता है. फिलहाल पुलिस महकमे में चर्चा का बाजार गर्म है और सबकी निगाहें बहुप्रतीक्षित सूची पर टिकी हैं. और इन पुलिस कर्मियों के नाम से विधायक भी खुश नजर नहीं आ रहे हैं.

डीएमएफ का धन, विकास कहीं और... अब किसे दें जवाब?

सिंगरौली की धरती खनिज उगलती है, धूल-धुआं यहां के लोग झेलते हैं, लेकिन विकास का खजाना कहीं और लुट रहा है! यह सनसनीखेज दावा कर आम आदमी पार्टी के प्रदेश सचिव राजेश सोनी ने सत्ता के गलियारों में हलचल मचा दी है. आरटीआई से जुटाए गए दस्तावेजों का हवाला देते हुए उनका आरोप है कि सिंगरौली के डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन (डीएमएफ) का करीब एक हजार करोड़ रुपये प्रदेश के दूसरे जिलों में खर्च कर दिया गया. अब जनाब... सवाल तो उठेंगे ही. जिस जिले की सडक़ें गड्ढों से भरी हों, अस्पताल संसाधनों के लिए तरस रहे हों और विस्थापित आज भी अपने हक की लड़ाई लड़ रहे हों, वहां का विकास फंड दूसरे जिलों की तस्वीर बदलने में कैसे लग गया? राजेश सोनी इसी सवाल को लेकर सरकार पर रोज नए तीर चला रहे हैं और जिलों की सूची के साथ खर्च का ब्यौरा भी सामने रख रहे हैं. सियासी गलियारों में चर्चा गर्म है कि अगर आरोपों में दम निकला तो जवाब देना आसान नहीं होगा. अब निगाहें सरकार पर हैं कि वह इन दावों का तथ्यात्मक जवाब देती है या फिर यह मामला आने वाले दिनों में और ज्यादा राजनीतिक ताप बढ़ाएगा.

परिवारवाद के खिलाफ सांसदों का आक्रोश

दिलीप झा

देश की राजनीति में इन दिनों वंशवादी पार्टी के खिलाफ जबरदस्त आक्रोश देखा जा रहा है. दो दशक पहले क्षेत्रीय दलों के लिए स्वर्णिम युग माना जाता था. लेकिन ये क्षेत्रीय दलों ने किसी विचारधारा अथवा सिद्धांत को नहीं अपनाया. जनता की मूल समस्याओं का समाधान इनका एजेंडा नहीं रहा. ये अपने परिवार के लिए ही समर्पित रहे. दो महीने पहले ही मोदी सरकार को लोकसभा में महिला आरक्षण और परिसीमन विधेयक पास कराने के लिए 352 सांसदों की स्वीकृति चाहिए थी, लेकिन एनडीए सरकार के पास 298 नंबर थे. 54 सांसदों की कमी थी. जिस तरह से उथल-पुथल पश्चिम बंगाल के बाद महाराष्ट्र और अब उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी टूटने की कगार पर है. राजनीतिक हलकों में यह चर्चा जोरों पर है कि आखिर गृह मंत्री अमित शाह को किसने सीक्रेट चिट्ठी थमाई. इस संदर्भ में सबसे पहले उत्तर प्रदेश के मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने मीडिया में आकर खुलासा किया कि समाजवादी पार्टी में भारी टूट होने जा रही है. उन्होंने यह भी खुलासा किया कि अखिलेश यादव के चाचा और बड़े समाजवादी नेता रामगोपाल यादव ने कुछ गुप्त बातें अमित शाह को एक

चिट्ठी भेजकर बताई है. वर्ष 2014 में बीजेपी को उत्तर प्रदेश से 70 लोकसभा की सीटें आई थीं जबकि 2019 में 64 सीटें मिली थीं लेकिन 2024 के आम चुनाव में उत्तर प्रदेश से 33 सीटों पर ही जीत हासिल हुई थी. वहीं, समाजवादी पार्टी ने 37 सीटों पर परचम लहराकर मोदी सरकार के लिए मुसीबतें खड़ी कर दी थीं. परिणामस्वरूप बीजेपी 240 पर सिमट गई और पूर्ण बहुमत से दूर हो गई लेकिन एनडीए घटक दलों के 53 सांसदों के साथ मोदी सरकार सरपट शासन की पटरी पर दौड़ने लगी. वहीं, विपक्षी दलों के नेताओं ने कयासबाजी और शिगूफे छोड़ कर मोदी सरकार को गिराने की भी बात करने लगे. लेकिन वर्ष 2024 में नवंबर में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी की बंपर जीत और 2025 में दिल्ली और बिहार विधानसभा चुनाव में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत ने विपक्षी दलों की संभावनाओं पर पानी फेर दिया.

दो साल के भीतर ही विपक्ष का कुनबा ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगा है. इसकी शुरुआत पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की टीएमसी सरकार की बुरी तरह पराजय के बाद से ही हो गई थी. विधानसभा चुनाव परिणाम के एक पखवाड़े के बाद ही टीएमसी के 80 विधायकों में से 58 विधायकों ने ममता के खिलाफ बगावत कर दी. उन्होंने बंगाल के राज्यपाल आर.एन. रवि से मुलाकात कर असली टीएमसी होने का दावा कर दिया. राज्यपाल ने कानूनी सलाह मशविरा कर ऋतब्रत चक्रवर्ती के नेतृत्व वाले दल को असली एनसीपीआई होने का न केवल दर्जा दे दिया बल्कि ऋतब्रत को बंगाल विधानसभा में प्रतिपक्ष नेता की मान्यता भी दे दी. इस घटना के ठीक एक सप्ताह बाद टीएमसी के 20 सांसदों ने भी ममता बनर्जी के खिलाफ बिगुल फूंक दिया और लोकसभा के स्पीकर ओम बिरला से मिलकर उन्हें अलग दल की मान्यता देने की गुहार लगाई. ओम बिरला ने उन्हें एनसीपीआई के रूप में मान्यता दे दी. उधर, शिवसेना यूबीटी उद्धव गुट में फिर दरार उत्पन्न हो गई है. उसके 9 सांसदों में से सात सांसदों ने उद्धव ठाकरे के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और उन्होंने असली शिवसेना एकनाथ शिंदे की पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली . ये वो सांसद हैं जो उद्धव ठाकरे के बहुत खास माने जाते हैं. सवाल उठता है कि आखिर क्या बात हो गई कि सांसदों का शिवसेना उद्धव से मन खट्टा हो गया. सबसे हैरानी की बात यह है कि उद्धव ठाकरे ने एक भी बागी सांसद से बात तक नहीं की. उलटे उनके खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग किया. शिवसेना को खत्म करने में संजय राउत का बड़बोलापन सबसे ज्यादा जिम्मेदार माना जा रहा है. वहीं, शरद पवार की पार्टी एनसीपी के 8 सांसदों में से पांच उनका दामन छोड़ने को तैयार हैं. इससे स्पष्ट है कि उनके सांसद भी एनसीपी की अंदरूनी तानाशाही से नाखुश हैं.

सूत्र बताते हैं कि बिहार में आरजेडी के चार सांसद भी टूटने के लिए तैयार हैं. पाटलिपुत्र के आरजेडी सांसद अभय कुशवाहा, बक्सर के सांसद सुधाकर सिंह, मीसा भारती, जहानाबाद से आरजेडी के सांसद सुरेंद्र प्रसाद यादव पार्टी छोड़ने के लिए तैयार हैं. जाहिर है इससे विभिन्न दलों के सांसदों में लोकतांत्रिक राजनीति पर भरोसा बढ़ रहा है, वे अपने भविष्य को लेकर चिंतित हैं.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

नागरिकता का प्रमाण नहीं है पासपोर्ट

देश में अपनी नागरिकता सिद्ध करने का कोई एक प्रामाणिक दस्तावेज नहीं है. वोटर कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड को भी पर्याप्त नहीं माना जाता. अब तो विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने यह भी कह दिया कि केवल पासपोर्ट से नागरिकता सिद्ध नहीं होती! क्या यह बात अटपटी नहीं लगती क्योंकि पासपोर्ट बनवाने के लिए तमाम दस्तावेज लगते हैं जिनमें जन्म प्रमाणपत्र, निवास का प्रमाण, शैक्षणिक जानकारी, वैवाहिक स्थिति तथा पुलिस वेरिफिकेशन लगता है. इतना होने पर भी पासपोर्ट को नागरिकता का प्रमाण नहीं मानना कितना सही है? विदेश में तो पासपोर्ट को देखकर ही माना जाता है कि व्यक्ति किस देश का नागरिक है. मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण (एसआईआर) के समय भी बंगाल व असम में लोगों से उनके दस्तावेज मांगे गए. यह सवाल भी उठाया गया कि क्या संबंधित व्यक्ति के माता-पिता का जन्म भारत में हुआ था? ऐसे दस्तावेज हासिल कर पाना किसी के लिए भी बेहद कठिन हो जाता है. पहले जन्म-मृत्यु का रिकार्ड रखने के बारे में लोग गंभीर नहीं थे. जब अस्पतालों की सुविधा नहीं थी तो घर में ही दाई प्रसव कराती थी. संपन्न लोग भी ऐसे दस्तावेज पेश नहीं

पासपोर्ट अपने आप में नागरिकता का प्रमाण नहीं है. ऐसी स्थिति में सरकार को कोई ऐसा अकेला परिपूर्ण दस्तावेज बनाना चाहिए जो व्यक्ति की नागरिकता को निस्संदिग्ध रूप से प्रमाणित करता हो.

कर पाते तो देश के लाखों गरीबों के पास यह डाक्युमेंट कहां से आएंगे? जिनका परिवार जीविका के लिए यहां-वहां भटकता रहता है, वह दस्तावेज कहां तक जुटाएंगे या सहेजकर रखेंगे? जन्मतारीख याद रखना तो दूर, ग्रामीण क्षेत्र में चैतू या कार्तिक जैसे नाम के लोग मिल जाएंगे जिनका जन्म चैत या कार्तिक माह में होने से उनका ऐसा नाम रख दिया गया. जिन राज्यों में बाढ़ का प्रकोप बना रहता है, वहां भी लोगों से दस्तावेज संभालकर रखने की उम्मीद नहीं की जा सकती. बाम्बे हाईकोर्ट ने 2013 में फैसला दिया था कि पासपोर्ट अपने आप में नागरिकता का प्रमाण नहीं है. ऐसी स्थिति में सरकार को कोई ऐसा अकेला परिपूर्ण दस्तावेज बनाना चाहिए जो व्यक्ति की नागरिकता को निस्संदिग्ध रूप से प्रमाणित करता हो.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

विजय जानना चाहते स्टालिन का पता, उदयनिधि से पूछा, कहां हैं तुम्हारे पिता

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री विजय को बड़ी फिक्र है कि पूर्व मुख्यमंत्री व डीएमके प्रमुख एमके स्टालिन कहां हैं! उन्होंने विधानसभा में स्टालिन की गैरमौजूदगी पर टिप्पणी करते हुए उदयनिधि से पूछा कि आपके पिता कहां हैं. वे हमें दिखाई नहीं देते! विजय का यह सवाल क्या जले पर नमक छिड़कने जैसा नहीं है!'

हमने कहा, 'इस तरह की पूछ-परख के पीछे आत्मीयता भी तो हो सकती है. विजय का आशय हो सकता है- छुपनेवाले सामने आ, छुप-छुप के मेरा जी ना जला, सूरज से किरण, बादल से पवन कब तलक छुपेगी ये तो बता!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, स्टालिन सदन में नहीं आए, इसका यह मतलब नहीं कि वह कहीं छुपे हैं. एक कार्यक्रम में स्टालिन ने विजय को जवाब देते हुए कहा कि मैं विधानसभा में रहूं या न रहूं, मैं लोगों के दिलों में बसा हुआ हूं.'

हमने कहा, 'जहां तक छुपने की बात है, उस पर कितने

ही फिल्मी गीत हैं जैसे कि छुप गया कोई रे दूर से पुकार के, दर्द अनोखे हाय दे गया प्यार के ! छुपा लो यूं दिल में प्यार मेरा जैसे मंदिर में हो लौ दिए की!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, किसी से उसके पिता की कुशलक्षेम या खैरियत पूछना गुनाह नहीं है. लोग उर्दू में किसी बच्चे से पूछते हैं-बरखुरदार, तुम्हारे बुजुर्गवार नजर नहीं आते. कहीं उनकी तबीयत नासाज तो नहीं है?'

हमने कहा, 'चुनाव में डीएमके को हराने से विजय को तसल्ली नहीं हुई. वह विपक्ष के नेता के रूप में स्टालिन को अपने सामने देखना चाहते हैं. आपने गीत सुना होगा- दुश्मन-दुश्मन जो दोस्तों से प्यारा है!' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, उदयनिधि के लिए विजय का टोन कुछ इस प्रकार का था-बाप बता, नहीं तो श्राद्ध कर! यदि स्टालिन चाहते तो वह बिग बी की शैली में जवाब दे सकते थे रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप लगते हैं, नाम है शहंशाह!'

हमने कहा, 'जब बाप के जूते में बेटे का पैर आ जाता है तो वह बच्चा नहीं रहता. उदयनिधि मुख्यमंत्री को जवाब दे सकते थे कि पहले मुझसे तो निपट लो, मेरे बाप की बात बाद में करना !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12302 -डॉ. सागर खादीवाला

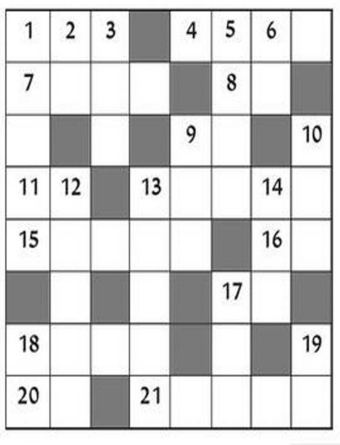

बाएं से दाएं
1.काला, अश्वेत, नीला (सं.) 4. वंदना के योग्य, सम्मान के योग्य (सं.) 7. विलाप करना, बिसूरना 8. जगह, मकान (सं) 9. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, काठी 11. तुच्छ, बुरा, अधम 13. हनुमान 15. यमराज का घर 16. राजा (राजपूताना एवं नेपाल के राजा) 17. व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात, कपड़े की बनावट में लंबाई के बल के सूत 18. कविता की पंक्तियां 20. दूध (सं.) 21. भीगा हुआ, आर्द्र

ऊपर से नीचे
1. जिसकी कल्पना न की जा सके 2. शिला, मसाला आदि पीसने की पत्थर की चौकोर पटिया 3. तप्त होना, धूप-आंच आदि से गरम होना, कष्ट सहना 5. रावण 6. आकाश के रंग का 9. जीवित रहने की अवस्था 10. सलाह, परामर्श (सं.) 12. चमकीला 13. पैरों से रौंदा हुआ 14. बहुत दिनों का, प्राचीन, पूरा करना 17. सरोवर, जलाशय 18. चिडिया, पक्ष का 19. दरवाजा, मुख (सं.)

Solution 12301

प्र	स	न्न		आ	शा		स
भा	त		प्र	भा	व	शा	ली
त	र्क	शा	स्त्र		क	न	का
		ज	व	ण		दा	
सु	ल	भ			च	र	क
ल			श	ह	र		र
गा	य	ब		र	स	मा	ता
ना	म	क	र	ण		या	र

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी. सुख प्राप्त होगा. नवीन मित्र से भेंट होगी. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी. वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पडेगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं मतभेद बढेंगे.

मेष ओर वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, तेजस्वी, साहसी, तथा उग्र स्वाभाव का, शिक्षा दीक्षा अच्छी रहेगी, नौकरी राजनैतिक कार्यो में सफलता मिलेगी, अनुशासनप्रिय होगा, इसमें नेतृत्व करने की भावना रहेगी. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

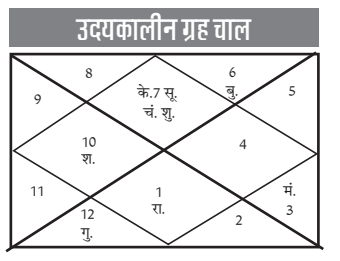

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा चन्द्रवासरे रात 4/35, मूल नक्षत्रे रातअंत 4/7, शुक्ल योगे दिन 3/21, विष्टि करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार धनु, पर्व-स्नानदान व्रतादौ पूर्णिमा, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को मूल नक्षत्र के प्रभाव से चीनी, रूई, कपास, खांड, सन, जूट, पाट, आदि के भाव में मंदी होगी, गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूँग, के भाव में तेजी का रूख रहेगा. अलसी, अरंडी, में गिरावट होगी. भाग्यांक 2631 है.

मेष- वाणी के असंयम से परिचितों को नाराज कर देंगे, आध्यात्मिक अभिरूचि में वृद्धि होगी, धार्मिक सत्संग बना रहेगा, रूके कार्यो के बनने का योग है.

वृषभ- लिये गये फैसले को बदलने की स्थिति बनेगी, कारोबारी यात्रा होगी, खानपान की अनियमितता रहेगी, शारीरिक श्रम अधिक करना होगा.

मिथुन- भूमि भवन के क्रय विक्रय से लाभ मिलेगा, ले-देकर काम कराने की योजना सफल होगी, जीवनसाथी के सहयोग से नवीन कार्य में सफलता मिलेगी.

कर्क- वैचारिक गतिरोध दूर होगा, कारोबारी यात्रा सुखद रहेगी,उत्सव समारोह में सम्मिलित होंगे, भूमि भवन मकान, आदि का काम बनेगा.

सिंह- लोग दबाव बनाने का प्रयास करेंगे, विवादास्पद मामले सुलझेंगे, धन व्यय की अधिकता रहेगी, परिश्रम एवं भागदौड़ करना होगी, अनुशासन बना रहेगा.

कन्या- कारोबारी विस्तार की योजना सफल होगी, मनोबल बना रहेगा, साहसिक प्रयत्नों से शत्रुओं का शमन होगा, धार्मिक कार्यो की पूर्ति होगी.

तुला- जिद में लिये निर्णय जी का जंजाल बनेंगे, सलाह लेकर काम करना लाभकारी रहेगा, आत्म विश्वास एवं परिश्रम से लाभ होगा, नया अवसर प्राप्त होगा.

वृश्चिक- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, कानूनी मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्यो में सफलता मिलेगी, जोखिम के कार्यो से बचने का प्रयास करें.

धनु- अधिकारियों से मेलजोल में अच्छी सफलता मिलेगी, भूमि भवन का काम बनेगा, शारीरिक सुख एवं मानसिक प्रसन्नता रहेगी, कामकाज के प्रति उत्साह रहेगा.

मकर- समय के साथ तौर तरीकों में बदलाव का मन बनेगा, धीमी गति से चल रही योजना में तेजी आयेगी, आय से अधिक व्यय होगा, विशिष्टजनों का सहयोग मिलेगा.

कुम्भ- रोक-टोक से वाद विवाद की स्थिति निर्मित होगी, धैर्य रखकर कार्य करना अच्छा है, आकस्मिक धन लाभ होगा, गुप्त शत्रुओं से हानि संभव.

मीन- अध्ययन में अच्छी सफलता मिलेगी, व्यापारिक साझेदारी लाभकारी रहेगी, नौकरी में अनुकूलता रहेगी, मांगलिक कार्यो पर व्यय होगा.

SUDOKU 7434

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7433

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6